M.K. Jha,
Dept of sociology
V.S.J college, Rajnagar

Indian Society
B.A Part-II, paper-III

Question- धर्म से क्या समझते हैं? धर्म के कार्य (प्रकार्य) पर विचार कीजिए

Ans- धर्म एक सामाजिक संस्था है जिसका प्रमुख कार्य व्यक्तियों को नैतिक- धार्मिक मूल्यों द्वारा भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करना है। भारतीय समाजशास्त्र में धर्म को सामाजिक एकीकरण का प्रभावपूर्ण साधन माना गया है। भारत में धर्म व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण करने में तथा सामाजिक स्तरीकरण का निर्माण में सदैव उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

धर्म किसी न किसी प्रकार की अति- मानवीय (super- human) या अलौकिक (super- natural) या समाजोपरि (supra- social) शक्ति पर विश्वास है जिसका आधार भय, श्रद्धा, भक्ति और पवित्रता की धारणा है और जिसकी अभिव्यक्ति, प्रार्थना पूजा या आराधना है।

जेम्स फ्रेजर (J. Frazer) के शब्दों में "धर्म से मेरा तात्पर्य मनुष्य से श्रेष्ठ उन शक्तियों की सन्तुष्टि अथवा आराधना करना है जिनके बारे में व्यक्तियों का यह विश्वास हो कि वे प्रकृति और मानवजीवन को नियंत्रित करती है तथा उन्हे मार्ग दिखाती हैं।"

E.B Tylor के अनुसार धर्म आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास है। Malinowski के अनुसार " Religion is a mode of action a system of beliefs and a sociological Phenomena as well as a personal experience" अर्थात् धर्म क्रिया की विधि है और विश्वासों की एक व्यवस्था भी; धर्म एक समाजशास्त्रीय तथ्य के साथ व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है।

Scanned with Cam

अतएव, धर्म विश्वासों की सम्पूर्णता का नाम है जो विश्वास अलौकिक शक्ति से सम्बन्धित होते हैं अलौकिक शक्ति को एक दिव्य परम माना जाता है इसे नैतिक कार्य समझकर मानव विभिन्न सामाजिक व्यवहार करता है और शक्ति से जोड़कर मानव अपना लक्ष्य पूरा करता है।

Functions of Religion

जीवन में धर्म का कार्य सर्वव्यापी और शाश्वत है इस दृष्टिकोण से धर्म का वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन कई प्रकार का कार्य समझने योग्य है जो निम्न प्रकार हैं :-

1. धर्म नैतिक मूल्यों का संरक्षक - धर्म नैतिक नियमों का पालन करवा कर व्यक्तिगत जीवन को संगठित बनाता है। अर्थात् धर्म से त्याग, सेवा, परोपकार एवं मानवीय गुणों का विकास होता है।

2. धर्म सामाजिक नियंत्रण का शक्तिशाली साधन - धर्म को एक दिव्य शक्ति माना गया है जो प्रत्येक कार्य के नैतिक-अनैतिक, अच्छाई बुराई के साथ देखा जाता है चूँकि अलौकिक शक्ति को ईश्वर का रूप माना जाता है फलत व्यक्ति असामाजिक कार्य- अनैतिक कार्य करने पर आत्म नियंत्रण लगाते हैं और मानवीय मूल्यों का रक्षा करते हैं।

3. मानसिक सुरक्षा :- धर्म अनिश्चितता, असुरक्षा, अभाव एवं प्राकृतिक आपदा जैसे परिस्थितियों से अनुकूलन का दैवीय शक्ति प्रदान करता है जिसमें संतुष्टि एवं इच्छा नियंत्रण का गुण भी रहता है।

4. व्यक्तित्व का निर्माण: धर्म में रचनात्मक शक्ति होती है जो व्यक्तियों को धार्मिक संस्कार और विधि-विधान द्वारा चरित्र निर्माण में सहायता देती है। इसके प्रभाव धर्म उत्सव, अनुष्ठान एवं मंगलमय व्यवहारों को जन्म देती है जो नैतिक पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है।

5. विचारों एवं व्यवहार-
धर्म में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, त्याग जैसे सार्वभौम कर्तव्य कर्म हैं जो व्यक्ति के विचार एवं व्यवहार को सर्वाधिक रूप में प्रभावित करता है।

6. सामूहिकता में वृद्धि:-
धर्म सामाजिक एकीकरण का प्रभावपूर्ण आधार है। धर्म अधिकार के बजाय कार्य-कर्तव्य पर जोड़ देता है धार्मिक कार्य में समानता जैसे प्रशिक्षण का अवसर मिलता है। जिससे सामूहिक जीवन शैली का विकास होता है।

7. लोकाचार का प्रभाव:
लोकाचार को सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों द्वारा समूह कल्याण होता है। धर्म से लोकाचार स्वीकृत होती है जिसमें अनेक सामान्य मूल्यों का निर्माण किया जाता है। जो समाज का व्यापी एवं कल्याणमूलक शक्ति है।

8. संघर्षपूर्ण मनोवृत्तियों पर नियंत्रण:
धर्म अनावश्यक परिवर्तन, हिंसात्मक संघर्ष एवं अस्वस्थ वातावरण पर अंकुश लगाता है।

Scanned with CamScanner

Thomas O' Dea ने अपनी पुस्तक Sociology of Religion में लिखा है कि धर्म व्यक्ति का समूह से एकीकरण करता है अनिश्चितता की दशा में इसकी सहायता करता है, निराशा के क्षणों में इसे ढाढस बंधता है व्यक्ति को सामाजिक लक्ष्यों के प्रति जागरूक बनाता है, आत्मबल में वृद्धि करता है तथा व्यक्तियों को एक-दूसरे के निकट रहने की भावना को प्रोत्साहन देता है।" अतः कहा जा सकता है कि धर्म व्यक्ति को अन्तःकरण में परिमार्जन करता है और सम्पूर्ण समाज में मानवीय-आचरण का सुव्यवस्थित परिचालन करता है।

Scanned with Cam